Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

Humanism in the Poetry of Naresh Mehta

Dr. M Abdul Rajak
Assistant Professor
Department of Hindi
Kristu Jayanti College (Autonomous),
Bengaluru-77, Mobile -9493405942

"मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदु:खकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।" (मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है- निबंध से)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

साहित्य का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य के रूप में दर्शाने के अभिप्राय से है। एक मनुष्य के दुख,दर्द, पीड़ा एवं तनाव को दूसरा बांट लेता है तो उसे मानवता कहते है। उसी को दूसरे शब्दों में कहा जाए को एक व्यक्ति के लगाव एवं तनाव के साथ दूसरा व्यक्ति जुड़ जाता है

तो मानवतावाद का उद्भव होता है। मानवतावाद वह है कि जिसमें मानव अन्य लोगों की दु:ख दर्द को अभिव्यक्त करें और उनके सुखी जीवन के मार्ग में बाधक न बनकर उनके प्रगति व विकास पर बल दें। मानवतावाद को मूलत: मनुष्य जाति के प्रति नैतिक दृष्टि रूप में देखा जाता है। जहाँ

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

दयालुता, परोपकार, सहानुभूति जैसे गुणों को मनुष्यता के लिए सार्वभौमिक माना जाता है। इसके अनुसार पीड़ा और यातना के संदर्भ में किसी के प्रति लिंग, प्रजाति, राष्ट्रीयता, धर्म के आधार पर कोई भेद-भाव नहीं रखा जाता है। मानवीय उच्चतर मूल्यों को 'मानवतावाद' कहा जाता है। इस प्रकार के मानवतावता के गुण नरेश मेहता की कविता में बहु आयाम के रूप में दिखाई पड़ते है।

नरेश मेहता की कविता की आलोचना पर विचार करने से पहले कविता की परंपरा बोध पर विचार एवं विश्लेषण करना बहुत जरूरी है। यदि बगैर परंपरा बोध के मानने योग्य आलोचना नहीं बन सकती, अगर कही बन भी जाए तो उसमें कहीं न कही गुणवत्ता की कमी दिखाई पड़ती है इससे बचने के लिए परंपरा बोध का होना अनिवार्य है। दरअसल आदिकाल से लेकर आधुनिक काल के प्रयोगवादी कविता तक इस बीच आए सभी कवियों ने कविता में मानवता को विस्तार से दर्शाया है।

कबीरदास ने दृढ़ता से उदार मानवतावाद का सर्वप्रथम समर्थन किया और अपने वाणियों से एक आदर्श मानवतावाद को खड़ा किया। कबीर दास ने सर्वप्रथम हमारे जीवन की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया, चिंतन मनन हेतु प्रेरित किया और आदर्श जीवन के लिए व्यावहारिक ज्ञान का सहजता के साथ दिया।

"हिन्दू तुरक के बीच में, मेरा नाम कबीर।
जीव मुकतावन कारनै, अविगति धरा शरीर।। "
"एक बूँद एक मल मतर, एक चाय एक गूदा।
एक जोति यैं सब उतपनौ, कौन ब्राँह्मण कौन सूदा।।" [1]

विभिन्न दुःखो से संसार को उभारने के लिए समय-समय पर संत महात्माओं का अविर्भाव होता ही रहता है। ऐसे संत कबीरदास। इसी तरह मानवतवाद के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। मानवीय उच्चतर मूल्य का अर्थ है स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के हित में कार्य करना को मानव अर्थ किसी मानव से घोषणा न करें संसार के सब मानव परस्पर मेलजोल से रहें सब मानव एक दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करें।

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

छायावाद के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने इलाहबाद की सड़क पर ग्रीष्म की दोपहरी में सड़क पर पत्थर तोड़नेवाली भारतीय युवा नारी के प्रति कवि का हृदय मानव अधिकारों की ओर संकेत

करता हुआ मानवतावाद की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। "तोड़ती पत्थर" कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं जिसमें कविने एक श्रमिक नारी का करूण शब्दचित्र खींचते हुए आधुनिक मानव को सामाजिक विषमता के लिए सोचने के लिए मजबूर किया है।

"वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर—
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।"[2]

नरेश मेहता के कविता की सही पहचान के लिए उनके रचना संसार की पृष्टभूमि का परिचयात्मक अध्ययन परम आवश्यक है। यह सर्वविदित है कि छायावाद के पश्चात् की काव्यधारा को हम यथार्थवादी काव्य की संज्ञा देते है। प्रगतिवाद और प्रयोगवाद इसी काव्यधारा के अन्तर्गत आते हैं। इनमें प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थ को प्रधानता देता है तो प्रयोगवाद वैयक्तिक यथार्थ पर जोर देता है। प्रगतिवाद का प्रेरणास्रोत मार्क्सवादी जीवनदर्शन होने के कारण प्रगतिवाद को नार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण माना जा सकता है।

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

प्रगतिवादी कवि की सारी सहानुभूति इन अशिक्षित भूखा किन्तु परिश्रमी व्यक्तियों के साथ है। डॉ. शिवकुमार मिश्र का कथन इस संदर्भ में विचारणीय है- "जहाँ सामान्य मानवतावाद मानव मात्र के विषय में बात करता है, वहाँ प्रगतिवादी कवि मात्र दलित और पीडित जनता तक ही अपनी सहानुभूति का प्रसार करता है।"[3] शोषित जनता के कारुणिक जीवन का कारण पूँजीपति या शोषक ही है। प्रगतिवादी कवि समस्त मानवता के कल्याण हेतु शोषितों का पक्षधर है तथा शोषकों को मानवता का शत्रु मानता है। डॉ.राम विलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन शिवमंगल सिंह सुमन, गजानन माधव मुक्तिबोध आदि समाजवादी काव्यधारा के कवि हैं। प्रयोगवादी व्यक्तिवादी धारा में मानव-विषयक धारणा का स्वरूप व्यक्तिवादी काव्य धारा अथवा प्रयोगवादी कविता की मानव विषयक धारणा के स्त्रोत पूर्णतः दिखाई पडते है।

प्रेमचंद ने साहित्य का मूल उद्देश्य संस्कार सिखाना मानते हैं उस दृष्टि के नरेश मेहता की कविताओं को देखा जाए तो साथ देखा जाए तो वे साहित्य का उद्देश्य मानवतावाद की स्थापना मानते है। और मानवतवादी के साथ-साथ जिजीविषा की स्थापना को मानते है। इसलिए उनकी कविताओं में साहित्य सृजन निरंतर बिना शर्त या अपवाद का अंतःकरण में अनेक वृत्तियों तथा भावों का एक साथ मंथन से सामूहिक दायित्व की ओर अग्रसर होता प्रतीत होता है। कवि नरेश मेहता की कविताओं के वाचन से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि उनकी मानवतावादी विश्वास मनुष्य की स्वतंत्रता और अस्मिता को सर्वोपरि मानते हुए, समाज हितैषी तत्वों को युग चेतना के अनुरूप ढालने का निरंतर प्रयास करते है।

नरेश मेहता ने अपने प्रबंध काव्यों के द्वारा लोककथात्मक कथा प्रसंगों को नये अर्थ-संदर्भों में अभिव्यक्त किया है, उन्होंने स्वयं लिखा है, ''किसी भी देश की या जाति की जातीयता उसकी मिथकता है।'[4] 'संशय की एक रात' में कवि मेहता मिथक के सहारे, रामायण की एक घटना, समकालीन समाज के व्यापक आधुनिक बोध को पाठकों के समक्ष रखा है। वेमनुष्यता की बात करते हुए लिखते हैं कि-

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

"सामने वाला यदि आवेग में
पशु हो गया हो
तो विवेक के रहते
प्रतीक्षा करो
उसके पुनः मनुष्य होने की।"

आगे कवि नरेश मेहता विवेकहीन मनुष्य को पशु कहते है और टूटे मानव-मूल्यों का पुनःनिर्माण पर विश्वास रखते हैं, राजनीति में निर्दय होने की अवस्था पर प्रकाश डालते हुए कवि लिखते हैं कि-

"यह सत्ताधारी
यह राज्य व्यवस्था
एक दिन
प्रत्येक व्यक्ति के भीतर
विचारशून्यता का
अन्धा कारागार निर्मित कर दें।"

दरअसल राजनीति आज इतनी अपवित्र बन गयी है कि आज देश में सत्ता लोलुप नेताओं के बीच जो सत्ता संघर्ष चलता है, उससे पीड़ित होने वाली आम जनता को शांति का कोई विकल्प नहीं मिलने से बेबस है आगे नरेश मेहता लिखते हैं कि-

"प्रत्येक व्यवस्था के पास
अपने बधनख होते हैं
अकेला दुर्योधन ही
दुर्विनीत नहीं था
व्यवस्था की मुकुट धारण करते ही
किसी भी व्यक्ति का
मनुष्यत्व नष्ट हो जाता है।"

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

देश को तब्दील करने की बात की जाए तो वह ज्यादा से ज्यादा राजनीति से जुडे मामले सामने आते है। कवि नरेश राजसत्ता से ज्यादा महत्व जनसत्ता को मान्यता देते हुए कलम चलाते हैं कि-

"इतिहास
खड़ग से नहीं
मानवीय उदात्तता से लिखा जाना चाहिए
हमारे इन राजसी कानों तक
कभी किसी अनाथ
नारी की
असहाय अवमानना आयी है ?
राज्य की यह आतुरता
कर्मठता
केवल सीता
या हमारे ही लिए क्यों ?"

सत्ताधारियों द्वारा समस्त सत्ता को केवल अपने ही राजा के सिंहासनारोहण का अनुष्ठान के लिए सुरक्षित रखना तथा अपनी सुरक्षा के लिए आम जनता की बलि देना, गरीब आदमी पर सत्ता का नशा को पर्दाफाश करना, सत्ता के लिए अपने ही रिश्तों को बली चडाना आदि विषय पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए कवि गंभीर से लिखते हैं कि-

"सत्ता के गोमुख पर बैठकर
उसके सारे शक्ति जलों को
अपने ही अभिषेक के लिए
सुरक्षित रखना
वह कौन सा दर्शन है लक्ष्मण ?"

वास्तव में आज समाज में निसंदेह राजनीति की यही गठिया नीति अपनी पूरी बर्बरता और दहशत के साथ समस्त देश को परिवर्तन कर रही है। कवि का मानना है कि मनुष्य का भाषाहीन हो जाना सृष्टि का ईश्वरहीन हो जाना है। महेता जी लिखते है कि-

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

"मानवीय स्वातंत्रय
मानवीय भाषा और
मानवीय अभिव्यक्ति के
प्रति इतिहास का सामना
वैसे ही
मानवीय प्रति गरिमा के साथ
करना होगा लक्ष्मण
प्रति इतिहास को इतिहास से नहीं
विनय से स्वीकारना होगा।"

समकालीन दौर में मानव के अंदर जो प्रेम, त्याग, बलिदान, न्योछावर, दया, करूणा, संतोष, विनम्रता आदि जैसे शब्द सिर्फ किताबों तक ही सीमित होते जा रहे हैं। आज हर व्यक्ति आदर्शवादी बात करते हुए दूसरों सुनाता लेकिन वह खुद उन बातों को परिहास की दृष्टि से देखता है। राजनीति के नेता मानवता को धर्म के साथ जोड दिया गया है। धर्म की आड में सत्ता को पा लेता है। दुनिया का हर धर्म मानव को मानवता का पाठ पढ़ाता है, लेकिन स्वार्थ, लालच और कट्टर विचार कई बार हमें गलत मार्ग पर लेकर चले जाते है। जिसका परिणाम पूरे समाज को भुगतना पड़ता है, मानवता को जाने धर्म को जाने और जन कल्याण के लिए अपना हर कर्म करें। वेद प्रकाश "वेदान्त" ने वर्तमान समय की स्थिति को यथार्थ के रूप में पर्दाफाश किया है। वेदान्त जी लिखते हैं कि-

"मानव बड़ा ही बेशर्म हो गया है,
मानवता से बड़ा धर्म हो गया है,
धर्म के नाम पर जान लेने को तैयार है,
यह कैसा खुदा और ईश्वर से प्यार है।"[5]

लेकिन नरेश महेता की कविता में सही अर्थ में मानवता किसे कहना चाहिए आदि अनेक विषय हमें जानकारी प्राप्त होती है। नरेश मेहता ने अपनी कविता के केन्द्र में मानवतावाद, स्त्री मुक्ति, प्राकृतिक सौन्दर्य,राष्ट्रीयता और प्रणयी संवेदना को निरंतर बनाए रखा है। उनकी साहित्य में नयी कविता की विषयगत और शिल्पगत प्रवृतियाँ मिलती हैं। कवि नरेश 'टूटे नहीं जीवन की लय' कहते

Kristu Jayanti Journal of Humanities and Social Sciences
E-ISSN: 2583-6277
Volume 3, 2023

pp 73-80

हुए 'मात्र मनुष्य' बनकर जीने के इच्छुक और अपने अधिकार पाने के लिए संघर्षशील आदमी के रूप में सामने आते हैं। नरेश मेहता की संवेदना में कुछ ऐसी रचनाधर्मिता थी जो उन्हें अन्य कवियों से अलग करती हैं। उनकी की रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी विशेषता उनकी मानव मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता और आत्मनिर्भरता थी, उनकी कविता की मजबूत आधारभूमि उनकी चिन्तन की सामाजिक भूमिका को मानी जा सकती है तथा वे पौराणिक आख्यानों और मिथकों के माध्यम से समकालीन के अनुकूल प्रश्नों से मुठभेड़ करते नजर आते हैं। उन्होंने आनवाले नई पीढ़ी के आन्तरिक द्वन्द्वों की नयी व्याख्या प्रस्तुत की, उनका स्वर हमेशा श्रद्धावाद के साथ जुडा रहता है।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. स.डॉ.एम.फिरोज खान 'नई सदी में कबीर' प्रकाशक आकाश पविलशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर्स ई-101663, उतरांचल कॉलोनी, लोनी बार्डर गाजियाबाद पृ सं-35
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला- तोड़ती पत्थर कविता- लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, पृ सं-26
3. डॉ.शिवकुमार मिश्र, नया हिंदी काव्य,कानपुर : अनुसन्धान प्रकाशन, 1962, पृ सं-17
4. नरेश मेहता -'संशय की एक रात' की भूमिका
5. वेद प्रकाश "वेदान्त"-धर्म और मानवता कविता से लिया गया है।